05.08.18 की अव्यक्त मुरली से कविता

तेरी मुरली की मस्ती में तन, सुध-बुध भूल जाता हूं।
कभी मूलवतन, कभी सूक्ष्मवतन कभी सतयुग में चला जाता हूं।।

तेरी मुरली के साजों से, अविनाशी दुआओं को पाता हूं।
हो जाता तन, मन दोनों दुरुस्त बेपरवाह बादशाह बन जाता हूं।।

बन के लाइट माइट हाउस, चहुं ओर सुख की किरणें फैलाता हूं।
तेरी मुरली की मस्ती में तन, सुध-बुध भूल जाता हूं।।

विधिपूर्वक मुरली सुनकर सिद्धि को जान श्रेष्ठ गति को पाता हूं।
खाये हुए को हजम कर लास्ट सो फास्ट चला जाता हूं।।

तेरी मुरली का एक एक बोल, पदमों की कमाई कराता है।
विधिपूर्वक सुन जो समाता है, वह श्रेष्ठ गति को पाता है।।

मुरली सुन सुन कर मुरलीधर की, मैं अतिन्द्रिय सुख में खो जाता हूं।
तेरी मुरली की मस्ती में तन, सुध-बुध भूल जाता हूं।।

सिर्फ खाओ और हजम करो तो लास्ट सो फास्ट जा सकते हो।
गैलपकर समय की दूरी को श्रेष्ठ नम्बर पा सकते हो।।

नशा चढ़ जाता जब मुरली का तो देह से ऊपर उड़ जाता हूं।
तेरी मुरली की मस्ती में तन, सुध-बुध भूल जाता हूं।।

मुरली से मुरली धर का रखता रिगार्ड, विधि से सिद्धि को पाता हूं।
रूहानी नशे में मस्त योगी बन मुरली का स्वरूप बन जाता हूं।।

रह मुरलीधर बाप के साथ अनुभवों में चलता जाता हूं।
तेरी मुरली की मस्ती में तन, सुध-बुध भूल जाता हूं।।